The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

जलवायु परिवर्तन और भारतीय विदेश नीति: बदलता परिप्रेक्ष्य

कैलाश चन्द्र बुनकर
व्याख्याता
लीलावती कॉलेज ऋषभदेव, उदयपुर (राजस्थान)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
जलवायु, वातावरण, परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधन

ABSTRACT

1990 के दशक की शुरुआत में जलवायु परिवर्तन भारत के लिए एक गंभीर कूटनीतिक चिंता के रूप में उभरा। तब से भारत बहुपक्षीय जलवायु वार्ताओं में विकासशील दुनिया का एक कट्टर चैंपियन रहा है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव और बदलती भू-राजनीति का सामना करते हुए, जलवायु परिवर्तन पर भारत की विदेश नीति में दो दशकों की बहुपक्षीय जलवायु वार्ता के दौरान महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। पहला, अपनी बदलती आर्थिक स्थिति के परिणामस्वरूप घरेलू जलवायु कार्रवाई करने की भारत की इच्छा और, दूसरा, राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका- 2014 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद से- देश और विदेश दोनों में जलवायु संवाद को आकार देने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल के वर्षों में, भारत ने जलवायु वार्ताओं में अपनी रक्षात्मक, नकारात्मक रणनीति को छोड़ दिया है और जलवायु कार्रवाई के लिए कई बहुपक्षीय पहलों का नेतृत्व किया है। जैसा कि भारत अपनी आजादी के 75 साल मना रहा है, यह जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर एक नया, आत्मविश्वास से भरा नेतृत्व तैयार कर रहा है। जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर वार्ता के दौरान वित्त और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर भारत के पारंपरिक रुख में निरंतरता है। भारतीय विदेश नीति ने वैश्विक मंच

पर अधिक शक्ति का दावा करने के लिए जलवायु परिवर्तन के रणनीतिक उपयोग में एक उल्लेखनीय परिवर्तन प्रदर्शित करना शुरू कर दिया है।

परिचय:

वर्तमान में विश्व के सभी देश जलवायु में परिवर्तन को लेकर चिंतित हैं और इस विश्वव्यापी समस्या के समाधान के लिए प्रयास कर रहे हैं हालाँकि इस दिशा में अभी तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया है कि इस वैश्विक समस्या से कैसे निपटे जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य दशकों, सदियों या उससे अधिक समय में होने वाली जलवायु में दीर्घकालिक परिवर्तनों से है। यह मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (जैसे, कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस) को जलाने के कारण पृथ्वी के वातावरण में तेजी से बढ़ती ग्रीनहाउस गैसों के कारण होता है।

जलवायु परिवर्तन को अनेक कारक प्रभावित करते हैं जो जलवायु में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार होते हैं जिनमे सौर विकिरण में बदलाव, पृथ्वी की कक्षा में बदलाव, महाद्वीपों की परावर्तकता में बदलाव, वातावरण, महासागरों, पर्वत निर्माण और महाद्वीपीय बहाव तथा ग्रीनहाउस गैस की सांद्रता में परिवर्तन आदि शामिल हैं। इस परिवर्तन के आंतरिक और बाहरी कारक हो सकते हैं। आंतरिक कारको में जलवायु प्रणाली के भीतर ही प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हो रहे परिवर्तन शामिल हैं जैसे की उष्मिक परिसंचरण, इसी प्रकार बाहरी कारको में कुछ प्राकृतिक कारक जैसे: सौर उत्पादन में परिवर्तन, पृथ्वी की कक्षा, ज्वालामुखी विस्फोट) अथवा मानवजनित कारक जैसे: ग्रीन हाउस गैसों और धूल के उत्सर्जन में वृद्धि शामिल हो होते हैं। कुछ कारक जलवायु को तीव्रगति से प्रभावित करते हैं जबकि कुछ कारकों का प्रभाव वर्षों बाद दिखाई देता है

जलवायु परिवर्तन के पीछे मानवजनित कारण महत्वपूर्ण है सामान्य रूप में जलवायु में परिवर्तन कई वर्षों की धीमी प्रक्रिया द्वारा होता है। लेकिन मनुष्य के द्वारा पेड़ पौधों की लगातार कटाई और जंगल को खेती या अन्य कार्यों में उपयोग करने के कारण इसका प्रभाव जलवायु में भी पड़ने लगा है और इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे रहे है।

भारत में जलवायु परिवर्तन:

भारत की जलवायु अत्यंत विविधतापूर्ण है। हिमालय से लेकर समतल समुद्र तटों तक जलवायु में एक उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। हिमालय पर्वत के ठंडे तापमान से लेकर दक्षिणी भारत की उष्णकटिबंधीय जलवायु तक व्यापक रूप से भिन्न जलवायु पाई जाती है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में सर्वाधिक वर्षा होती है, जबकि उत्तर-पश्चिमी राज्य जल की कमी के कारण थार और विशाल भारतीय मरुस्थल का निर्माण करते हैं। जलवायु दशाओं की इस विविधता ने हमेशा भारत को लाभान्वित किया है।

भारत में आर्थिक गतिविधियों के उच्चतम घनत्वों में से एक पाया जाता है और आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी आजीविका के लिये प्राकृतिक संसाधन आधार पर आश्रित है जहाँ वर्षा पर उच्च निर्भरता देखी जाती है। जलवायु परिवर्तन मौसम के पैटर्न को कम अनुमान-योग्य बना सकता है। ये अप्रत्याशित मौसम पैटर्न फसलों की खेती को कठिन बना सकते हैं। भारत जैसी कृषि अर्थव्यवस्था में, जहाँ वर्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रखती है, जलवायु परिवर्तन का अर्थव्यवस्था पर तत्काल असर पड़ता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव:

उपज में कमी: जलवायु परिवर्तन मौसम पैटर्न को समझना दुरूह बना देंगे। मानसूनी परिवर्तनों के बारे में अनिश्चितता किसानों के निर्णय को प्रभावित करती है कि कब कौन-सी फसल उगाई जाए और इसके परिणामस्वरूप उत्पादकता कम हो जाती है। इसके अलावा, समय पूर्व मौसमी हिम गलन और घटते ग्लेशियर सिंचाई के लिये आवश्यक नदी के प्रवाह को कम कर देंगे।

पशुधन पर प्रभाव: भारत में दुनिया की सबसे बड़ी पशुधन आबादी मौजूद है, जहाँ पशुओं का उपयोग विशेष रूप से भूमिहीन परिवारों में दूध उत्पादन, खाद एवं बीजारोपण और घरेलू पूंजी के रूप में किया जाता है। हीट स्ट्रेस पशुओं के लिये आहार और चारे को कम करते हैं तथा रोग प्रसार की अनुकूल दशाओं को बढ़ाते हैं।

श्रम कार्यबल में कमी: चरम ताप/गर्मी के दिनों में श्रमिकों की उत्पादकता कम हो जाती है जिससे औद्योगिक उत्पादन कम हो जाता है। इससे निर्यात में कमी आती है और राष्ट्रीय आय घटती है। इससे अप्रत्यक्ष रूप से विश्व व्यापार प्रभावित होता है। जलवायु परिवर्तन संज्ञानात्मक प्रदर्शन को कम करता है और उन क्षेत्रों में कार्य घंटों में कमी लाता है जहाँ निर्माण जैसी भारी बाह्य गतिविधि की आवश्यकता होती है।

ऊर्जा संकट: अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) के अनुसार, भारत की प्राथमिक ऊर्जा मांग वर्ष 2030 तक दोगुनी हो जाएगी। ऊर्जा और जलवायु के बीच एक विशिष्ट संबंध पाया जाता है जहाँ बढ़ते तापमान के साथ ऊष्मा प्रभावों के शमन की प्रक्रिया में सहयोग के लिये ऊर्जा उपयोग में वृद्धि की मांग बढ़ती जाती है। इसके अलावा, ऊर्जा की बढ़ती मांग प्रायः जलवायु-परिवर्तन नीतियों के साथ टकराव रखती है।

अवसंरचना पर प्रभाव: एक बेहतर और सुदृढ़ अवसंरचना किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में व्यापक योगदान करती है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं की चरम घटनाओं ने आधारभूत संरचना को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। उदाहरण के लिये, भारत ने पिछले एक दशक में बाढ़ से लगभग 3 बिलियन डॉलर की आर्थिक क्षति उठाई है जो वैश्विक आर्थिक क्षति का 10% है। वर्ष 2020 में चक्रवात अम्फान (Amphan) ने भारत में लगभग 13 मिलियन लोगों को प्रभावित किया।

अपवाह प्रणाली पर प्रभाव: भारत अपने उपलब्ध जल का 34 प्रतिशत प्रतिवर्ष इस्तेमाल करता है जहाँ सिंधु-गंगा मैदान इसका 'ब्रेडबास्केट' है। बढ़ते तापमान और बढ़ती मौसमी परिवर्तनशीलता के कारण हिमालय के ग्लेशियर अधिक और तेज़ी से पिघल रहे हैं। यदि दर में वृद्धि होती है तो हिमनद झीलें फट पड़ती हैं और अपनी प्राकृतिक सीमा से बाहर निकल जाती हैं। इससे इन ग्लेशियरों द्वारा पोषित नदी घाटियों में बाढ़ आने की संभावना बनती है और फिर बाद में नदी का प्रवाह घट जाता है जिसके परिणामस्वरूप जल की कमी उत्पन्न होती है।

असमानता में वृद्धि: भारत में अनुकूली क्षमता राज्य, भौगोलिक क्षेत्र और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अनुरूप पर्याप्त भिन्न-भिन्न है। निम्न आय वाले परिवार जलवायु परिवर्तन संबंधी आर्थिक क्षति के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, क्योंकि वे अनाज की बढ़ती कीमतों और कृषि मज़दूरी में गिरावट से सीधे प्रभावित होते हैं।

इस प्रकार, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल होने के सीमित साधन रखने वाले लोगों के कल्याण के लिये किये जाने वाले प्रयासों के परिणामस्वरूप सीमित बजट और निम्न आर्थिक विकास जैसे परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रति भारतीय नीति के लक्ष्य:

2015 में भारत सहित दुनिया के 200 से अधिक देशों ने जलवायु परिवर्तन को लेकर पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए थे और दुनिया के तापमान को 1.5 डिग्री से अधिक ना बढ़ने देने की प्रतिबद्धता ज़ाहिर की थी इस प्रतिबद्धता के तहत ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम किया जाना था।

- इसके तहत हर देश को अपने नेशनली डिटरमाइंड कॉन्ट्रिब्यूसंश (एनडीसी) तय करने होते हैं और संयुक्त राष्ट्र के समक्ष पेश करने होते हैं।
- इनके तहत ये परिभाषित करना होता है कि देश कितना कार्बन उत्सर्जन होने देगा और इसमें कितनी कटौती करेगा और कैसे करेगा।

अगस्त, 2022 में भारत ने भी अपने ताज़ा एनडीसी लक्ष्य पेश किए थे। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत की नीति प्रगतिशील है और विश्व के अन्य देशों को भी इसी प्रकार की नीति का अनुसरण करना चाहिए।

इसमें भारत ने तीन अहम वादे किए थे।

- भारत 2005 के स्तर के मुक़ाबले अपनी जीडीपी से होने वाले उत्सर्जन को 2030 तक 45 फ़ीसदी तक कम करेगा।
- साल 2030 तक भारत अपने कुल बिजली उत्पादन का 50 फ़ीसदी तक स्वच्छ ऊर्जा से हासिल करेगा।
- अतिरिक्त पेड़ और जंगल लगाकर भारत 2.5 से 3 अरब टन अतिरिक्त कॉर्बन को सोखेगा।

जलवायु कूटनीति और भारत:

सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि किसी राष्ट्र द्वारा अपनी विदेश नीति में जलवायु परिवर्तन को स्थान देना ही जलवायु कूटनीति कहलाता है। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था, बाज़ार और विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। जानकारों का ऐसा मानना है कि भारत जलवायु कूटनीति के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका

निभा सकता है। जलवायु कूटनीति पर भारत का रुख 1990 के दशक में 'समान किंतु विभेदित दायित्वों के सिद्धांत के माध्यम से पर्यावरणीय उपनिवेशवाद के मुद्दे को उजागर करते हुए विकसित हुआ। जिस ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी संस्था की स्थापना करने के लिये प्रेरित किया।

भारत को अपनी विदेश नीति के एजेंडे में जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग को शीर्ष स्थान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार भारत स्वप्रत्यनों से भी लाभ प्राप्त कर सकता है।

भारत को अपनी जलवायु कूटनीति के संबंध में एक ऐसे विकासात्मक मॉडल को तैयार करने की आवश्यकता है जो अनुकूलन पर केंद्रित हो और जलवायु परिवर्तन के साथ भारत की समस्त ज़रूरतों को ध्यान में रखता हो तथा वित्त और तकनीक जैसे मुद्दों पर पश्चिम से जुड़ाव को प्रोत्साहित करता हो।

पर्यावरण हेतु तकनीकी सहयोग से एक देश का आर्थिक लाभ किसी अन्य देश के साथ स्थाई जुड़ाव सुनिश्चित कर सकता है और जिसका प्रभाव वैश्विक कार्यवाहियों पर भी देखने को मिल सकता है। जर्मनी द्वारा अपने घरेलू कार्यक्रमों के माध्यम से नवीकरणीय उर्जा की कीमतों में कमी करना नवीकरणीय उर्जा के वैश्विक मूल्यों के समर्थन का एक बेहतरीन उदाहरण है।

विकासशील देशों की आवाज़ के तौर पर भारत को चाहिए कि वो विकसित और अमीर देशों पर जलवायु परिवर्तन से जुड़ी अपनी कोशिशें तेज़ करने का दबाव बनाए। इस कोशिश में भारत को चाहिए कि वो COP27 को विकासशील देशों के लिए एक ऐसा अवसर बनाए जो समानता और समावेशी होने के सिद्धांत में अपने साझा यक़ीन को दोहराते हुए, जलवायु परिवर्तन के लक्ष्य हासिल करने का साझा रास्ता निर्धारित कर सकें।

दूसरा भारत को चाहिए कि वो विकसित देशों पर इस बात का भी दबाव बनाए कि वो विकासशील देशों को पूंजी और तकनीक उपलब्ध कराएं। इससे विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से लड़ने की अपनी क्षमता बढ़ाने और तबाही लाने वाले जलवायु परिवर्तन के हिसाब से ख़ुद को ढालने में मदद मिलेगी. IPCC की रिपोर्ट कहती है कि 2010 से 2020 के दौरान, जलवायु परिवर्तन के चलते भयंकर मौसम जैसे कि सूखा, बाढ़ और तूफ़ानों ने अमीर देशों की तुलना में सबसे कमज़ोर विकासशील देशों में 15 गुना ज़्यादा लोगों की जान ली है। इसी प्रकार यदि भारत भी नवीकरणीय उर्जा को सटीक और

सही तरीके से अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में प्रदर्शित करता है तो इससे जलवायु परिवर्तन के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में भारत का महत्त्व बढ़ेगा।

निष्कर्ष:

यह अति-आवश्यक है कि भारत जलवायु परिवर्तन को अपनी विदेश नीति में प्राथमिकता दे और इसे केवल पर्यावरणीय या आर्थिक दृष्टि से न देखकर इसके रणनीतिक महत्त्व को भी समझे। भारत अपनी 'प्रथम पड़ोस' की नीति के माध्यम पड़ोसी देशों की ओर ध्यान देकर जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। जलवायु परिवर्तन को अपनी विदेश नीति का अहम हिस्सा बनाना और जलवायु कूटनीति की ओर अगसर होना भारत को एक संवेदनशील और ज़िम्मेदार वैश्विक नेता के रूप में पेश कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- जैन, सचिन कुमार. (2010). जलवायु परिवर्तन का जमीनी चेहरा. दिल्ली: विकास संवाद.
- अटेरीज, ए. और अन्य. (2012). क्लाइमेट चेंज पॉलिसी इन इंडिया: व्हॉट शेप्स इंटरनेशनल, नेशनल एंड स्टेट पॉलिसी. एमबीओ, वॉल्यूम-41, न.-01, पेज-68-77.
- प्रसाद, शिव और अन्य. (2014). पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं कृषि. दिल्ली: बायो ग्रीन बुक्स.
- दुबाश, नवरोज के. (2015). हैंडबुक ऑफ़ क्लाइमेट चेंज एंड इंडिया: डेवलपमेंट, पॉलिटिक्स एंड गवर्नेंस. दिल्ली; राउतलेज.
- मणि, दिनेश. (2015). जलवायु परिवर्तन. दिल्ली: एआईएसईटी पब्लिकेशंस.
- हैरिस, पॉल जी. (2018). क्लाइमेट चेंज एंड फॉरेन पॉलिसी. दिल्ली: टेलर एंड फ्रांसिस.
- दुबाश, नवरोज के. (2019). इंडिया इन अ वार्मिंग वर्ल्ड: इंटीग्रेटिंग क्लाइमेट चेंज एंड डेवलपमेंट. दिल्ली: ओयुपी.
- रमेश, मृदुला. (2019). दी क्लाइमेट सोल्युशन: इंडियाज क्लाइमेट चेंज क्राइसिस एंड व्हॉट वी कैन डु अबाउट इट. दिल्ली: हेशेट इंडिया.

- गुप्ता, अरविन्द एंड वाधवा, अनिल. (2020). इंडियाज फॉरेन पॉलिसी: सर्वाइविंग इन अ टर्बुलेंट वर्ल्ड. दिल्ली: सेज.
- कुमार, संतोष. (2022). वैश्विक उष्मण व जलवायु परिवर्तन. दिल्ली: शाश्वत पब्लिकेशन.
- झा, व्योमा. (2022). इंडिया एंड क्लाइमेट चेंज: ओल्ड ट्रेडिशंस एंड न्यू स्ट्रेटेजीज. इंडिया क्वार्टरली, वॉल्यूम-78, इश्यू-2, मई.